P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika
E: ISSN NO.: 2349-980X Vol-III* Issue-VI* February-2016

सुनीता जैन के उपन्यासों में नारी : मरणातीत और बिन्दु के सन्दर्भ में

संध्या प्रजापति
शोधार्थी,
भाषा अध्ययन शाला विभाग,
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय,
इन्दौर, मध्य प्रदेश

चन्दा तलेरा जैन
प्राध्यापिका,
हिन्दी विभाग,
माता जीजाबाई शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
इन्दौर, मध्य प्रदेश

सारांश

नारी का जीवन एक समान नही होता है। यहाँ तक कि एक नारी के विचार दूसरी नारी के विचार से भिन्न होता है। ऐसा ही कुछ सुनीता जैन के उपन्यास मरणातीत और बिन्दु में देखने को मिला है। इस शोध पत्र में हम ने इन उपन्यासों की नायिकाओं का व्यक्तिगत एवं पारिवारिक जीवन, उनका जीवन संघर्ा एवं विचारों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है। इसके अलावा भारतीय एवं पाश्चात्य संस्कृति उनके जीवन में क्या महत्त्व रखती है, उस पर भी प्रकाश डाला गया है।

मुख्य शब्द : उपन्यास, संस्कृति, तुलनात्मक अध्ययन, नारी, मरणातीत, बिन्दु।

प्रस्तावना

संस्कृति प्रत्येक देश और समाज की पहचान होती है। संस्कृति 'किसी भी देश या जाति के अपने चारित्रिक तथा बौद्धिक उन्नयन से है।'[1] आज जितने देश उतनी ही संस्कृति है, परन्तु संस्कृति का मूल श्रोत एक ही है ऐसा माना गया है। परिस्थितियाँ तथा समाज की आवश्यकता के अनुरूप रहन–सहन, खान–पान, वेश–भूषा, आचार–विचार, चिंतन–दर्शन में परिवर्तन के होने के कारण ही विभिन्न संस्कृति का जन्म हुआ है। भारतीय एवं पाश्चात्य संस्कृति में अंतर इतना है कि पाश्चात्य देश में व्यक्तिगत स्वतंत्रता है। वह अपने अनुभव व इच्छा के अनुरूप अपने कर्त्तव्यों का निर्वाह करता है। परन्तु भारतीय संस्कृति में संस्कार, परम्परा, रीति–रिवाज की सीमा रेखा है।

उद्देश्य

संस्कृति प्रत्येक देश की पहचान होती है। संस्कृति में संस्कार जुड़ा होता है। भारतीय संस्कृति में विवाह बड़ा और महत्त्वपूर्ण संस्कार है। स्त्री और पुरूष दोनो को ही ये संस्कार निभाने पड़ते हैं। विवाह के उपरान्त नारी विभिन्न परिस्थितियों का सामना करते हुए अपने जीवन को कैसे सफल और उद्देश्य पूर्ण बनाती है। इसे दो उपन्यासों–मरणातीत और बिन्दु के माध्यम से लाने का प्रयास किया है।

भारतीय संस्कृति में विवाह आवश्यक है जो अनादिकाल से चला आ रहा है। वैदिक युग में विवाह–'मर्यादित, आदर्श एवं अनुकरणीय है और समाज की पवित्रता तथा उच्च नैतिक प्रतिष्ठा के लिए अतीव महत्वपूर्ण है।'[2] विवाह को मोक्ष के द्वार तक पहुँचने का आर कर्त्तव्य निर्वाह का मार्ग भी मानते हैं। समाज में स्त्री और पुरूष समान है। परन्तु पुरूषों का अधिकार और स्त्री को कर्त्तव्यों और मर्यादाओं की लक्ष्मण रेखा खींच दी गई है। विवाह के पूर्व एवं उसके उपरान्त नारी का जीवन किस प्रकार से व्यतीत होता है, प्रवासी लेखिका सुनीता जी के दो उपन्यासों मरणातीत और बिन्दु में नारी की तुलनात्मक अध्ययन करके व्यक्त होता है।

मरणातीत उपन्यास की गोमा और बिन्दु उपन्यास की नायिका बिन्दु। दानों नायिका सम्पन्न परिवार से है। शिक्षित, कॉलेज की प्राध्यापिका, दोनों का विवाह सम्पन्न परिवार में हुआ है। दोनों के ही एक–एक पुत्र है, फिर भी उनका जीवन एकाकी, नीरस है। जीवन के रंगों को देखने के लिए तरसती आँखे.....। गोमा विधवा और बिन्दु पति से अलग विधवा जैसे जीवन व्यतीत कर रही है। मरणातीत उपन्यास में तीन नारी पात्र हैं।

मुख्य पात्रगोमा के 'जीवन में कोई गति नहीं।.....कोई उससे मिलने नही आता। कही वह जाती नही। बंधन बाहर का नहीं भीतर का है। उसके मन का है। उसके मन पर है।'[3]

गोमा के परिवार में बेटे के अतिरिक्त कोई नही है। पति राज,एयरफोर्स में होनहार यान चालक थे। बहुत ही खुशमिजाज, महत्वाकांक्षी उनका व्यक्तित्व था, अब गोमा की दीवार में तस्वीर बन कर टंगे हुए है। विवाह के कुछ समय बाद ही विमान–दुर्घटना में मृत्यु हो गई थी। भारतीय संस्कृति में 'विधवा दुःख के

सागर में निमग्न होकर उदासीन व्यथितचित्त, दीन, आनन्दविहीन तथा जीवन से निराश हो जाती थी।[4] ऐसे ही गोमा का जीवन है, सरल, सादा, सफेद साड़ी में लपेटा हुआ जीवन.....। आय हेतु कॉलेज में पढ़ाती थी। साथ ही उपन्यास लिखकर अपना जीवन व्यतीत करती थी।

रीता उपन्यास की आलोचना के सिलसिले में गोमा की मुलाकात रीता से होती है। रीता 'गोरा चेहरा तराशे हुए नक्श और बेहद लम्बे बाल.....गले में मंगलसूत्र और हाथों में सोने की चूड़ियाँ।'[5] रीता जगदीश की पूर्व प्रेमिका है, इसका विवाह भारतीय राजनायिक से हुआ है। विदेश में रहने के कारण पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है, वह खुल विचारों की स्वतंत्र नारी है। पति और बच्चों के रहते हुए अपने पूर्व प्रेमी से वैवाहिक सम्बन्ध बनाए हुए है। गोमा सोचती है 'ऊपर से इतनी सुन्दर लगने वाली रीता को कौन कह देगा कि दोहरा जीवन बिताती है।'[6]

अन्य पात्र शोभना कॉलेज की होनहार छात्रा है वह अशोक से विवाह करना चाहती है। परन्तु घर के बड़े लोग कहते हैं– 'एयरफोर्स के लोग चरित्रहीन होते हैं। उनकी जिन्दगी का कोई भरोसा नही।.....अशोक से शादी करके मैं दो–एक बरस में ही विधवा हो जाऊँगी।' मेरा जीवन बरबाद हो जाएगा। बड़े कितने स्वार्थी, संकुचित विचार के होते हैं।

गोमा की मुलाकात रीता, शोभना और एक पत्नी जिसकी कुछ हफ्ते पहले मृत्यु हुई है और उसका पति दूसरा ब्याह रचाने जा रहा है। शास्त्रकारों ने' नारियों के सतीत्व का मानदण्ड, एकपतीत्व तथा मन से भी परपुरूष का स्मरण न करना माना है।'[7] उनका पुनर्विवाह असंभव है। परन्तु पुरूष के लिए ऐसा कोई नियम व बंधन नहीं है। यहाँ रीता आधुनिकता का प्रतीक है, वह इन नियमों के बन्धन से परे है। आधुनिक समय में स्त्री और पुरूष दोनो को समान अधिकार है। जीवन मूल्य परिवर्तित हो रहा है। गोमा यह सब देखकर अपनी संकीर्ण मानसिकता से निकलकर सोचती है, कि वह अपना सम्पूर्ण जीवन पति की याद में होम कर रही है। अतीत को अतीत में ही रहने देना उचित है। जगदीश का अपने प्रति प्रेम और विश्वास देखकर दुबारा नए सिरे से जीवन आरम्भ करती है।

बिन्दु उपन्यास में, समाज ने नारी को कोमल व कमजोर की संज्ञा दी गई है, परन्तु वे आत्मविश्वासी व दृढ़ प्रतिज्ञ होती है। प्रतिकूल परिस्थितियों में अडिग रहती है, पत्तों की तरह बिखरती नहीं है। ऐसे ही इस उपन्यास की नायिका बिन्दु का चरित्र है। इनका संपूर्ण जीवन संघर्ष में ही बीत गया है। बचपन पिताजी के तिरस्कार, माता के ताने, छोटे भाई के मार खाकर बीता। जन्म होते ही माँ ने यह कहकर फेंक दिया–'इस डायन का वह क्या करेगी, जो जन्म होते ही भाई को निगल गई।'[8] पिता जी कहते–छोटी थी तो बड़ी बदसूरत थी। लेकिन उसने अपनीखुशी काल्पनिक कहानी, फूल पत्तों आदि में ढूंढ़ लेती है। बड़ों का स्नेह, लाड़–दुलार बुआ के बेटे आदित्य से मिला, जो पढ़ने के लिए आया था। उसके जाने के बाद.....। बिन्दु का बचपन बीता, स्कूल छोड़ कॉलेज में कदम रखी। युवा मन भावुक, चंचल, आकाश को मन बाँहों में भरने के लिए आतुर रहता है, ऐसा ही मन बिन्दु का था, वह पढ़–लिखकर कुछ बनना चाहती थी। बहुत होशियार और कविता में भी विशेष रुचि थी, 'साल भर में जीते ढेर से पुरस्कारों को लिए घर आई।'

कवि का मन कवि की तरफ ही झुकता है, बिन्दु का झुकाव शगुन की तरफ हो गया।परन्तु घर वालों को यह रिश्ता पसंद नहों था। माँ यह तक कहती है–भांड है भांड, जलसों में गाता फिरता है। भारतीय संस्कृति में 'जाति, विद्या, आयु, शक्ति, आरोग्य, सहायक (मितादिकी), उच्च आकांक्षाएँ, धन सम्पत्ति, ये आठ गुणवर के होना चाहिए।'[9]

इसलिए उसका विवाह उसकी इच्छा के विरुद्ध सम्पन्न कृष्णकांत से हो जाता है। विवाह कर्त्तव्य निर्वाहका दूसरा नाम भी है, जिसे पूरी ईमानदारी से निभाती है। मातृत्व का अंकुर मन को पल्लवित तो करता ही है, नारी को सम्पूर्णता और अमरता का एहसास भी देता है। बेटे अजय के आने से ऐसा कुछ हुआ, परन्तु कृष्णकांत के भीतर ईर्ष्या का, संदेह का कांटा उसे पूरी तरह से विकृत कर रहा था, बिन्दु से उसकी दूरियाँ बढ़ती जा रही थी। समाज नारी के लिए नैतिक मापदंड का घेरा बना दिया है, चरित्र निर्मल, पतिवता, स्त्री धर्म का पालन करने वाली होनी चाहिए, नहीं तो उसके चरित्रपर लांछन लगने में देरी नहीं होती है। ऐसा ही कुछ कृष्णकान्त कर रहा है, यहाँ भी जीवन....। यह सब देखकर बिन्दु 'अपने आप को सब तरह का कष्ट देती।'[10] वह धीरे–धीरे कृष्णकाय और बीमार हो गयी थी। कृष्णकांत इसके बावजूद उसको माफ नहीं कर सका। जब इलाज के लिए बिन्दु पहाड़ों पर गयी, उसे बिना बताए बेटे अजय को लेकर इंग्लैण्ड चला गया। यह जानकार उसकी आत्मा में हाहाकर उठा 'तेरी सृष्टि बाँझ हो जाए भगवान।'[11] बिन्दु इतना सब घट आने के बावजूद वह अमेरिका बुआके यहां जाकर पढ़ाई पूर्ण कर कॉलेज की प्राध्यापिका बनती है। पश्चिमी धरती में रहने के बावजूद अपनी संस्कति का त्याग नहीं करती है। वह दूसरा विवाह नहीं करती। कृष्णकांत के गंभीर रुप से बीमार होने पर भारत लौटती है।

निष्कर्ष

सुनीता जी दोनों उपन्यासों से कहना चाहती हैं कि समाज में स्त्री और पुरुष समान हैं। ये संस्कृति, संस्कार, परम्पराएँ मृत्यु तुल्य जीवन जीने के लिए नहीं है, अपितु रिश्तों को मजबूती से बांधने के लिए है। जीवन हमारा संतुलित रहें, सदाचारी बने, संघर्ष में सहज रहे, सरल व्यक्तिव हो, और सदैव स्पर्धा में सफलता हासिल करे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. वैदिक साहित्य और संस्कृति–पृ. क्रं. 7
2. ब्रह्माण्ड पुराण का सांस्कृतिक अध्ययन–पृ. क्रं. 396
3. सुनीता जैन समग– पृ.क्रं. 204
4. रामायण में नारी–पृ.क्रं. 272
5. सुनीता जैन समग्र– पृ. क्रं. 210
6. सुनीता जैन समग्र– पृ.क्रं. 222
7. भारतीय संस्कृति में नारी–पृ.क्रं. 249
8. सुनीता जैन समग्र–पृ.क्रं. 254
9. भारतीय संस्कृति में नारी–पृ.क्रं. 96
10. सुनीता जैन समग्र–पृ.क्रं. 291
11. सुनीता जैन समग्र–पृ.क्रं. 296